भारतीय खान ब्यूरो
INDIAN BUREAU OF MINES
सतत कार्यरत
ON WITH THE JOB

यथार्थ

अंक 17 | 2019–20

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर

यथार्थ

अंक- 17
वर्ष - 2019-20

भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर
की
वार्षिक पत्रिका

भाषा की अपनी एक ताकत होती है ।
हमारे देश के पास इतनी समृद्धि है,
इतनी विशेषता है, मातृभाषा के रूप में
हर राज्य के पास ऐसा अनमोल खजाना है,
उसको हम कैसे जोड़े और जोड़ने में
हिंदी भाषा एक सूत्रधार का काम कैसे करे,
उस पर अगर हम बल देंगे, हमारी भाषा
और ताकतवर बनती जाएगी ।

नरेंद्र मोदी
प्रधानमंत्री
भारत

सम्पादक
श्री हरकेश मीना
क्षेत्रीय खान नियंत्रक

सह सम्पादक
श्री दयानन्द उपाध्याय,
वरिष्ठ सहायक खान नियंत्रक एवं
हिन्दी सम्पर्क अधिकारी

सम्पादक मंडली
श्री दयानन्द उपाध्यय, सहायक खान नियंत्रक
श्री आशीश नारायण, कनिष्ठ सांखियकी अधिकारी
श्री महेश्वर मिश्र, उच्च श्रेणी लिपिक

आवरण पृष्ठ दिज़ाईन एवं पत्रिका लेआउट
श्री पी एम सुन्दरेस्वर, सहायक प्रशासन अधिकारी

संपादकीय

“यथार्थ” के लिए सम्पादकीय लिखते समय मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। किसी भी स्वाधीन देश के लिए, जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का है। जब भारतीय संविधान सभा में संघ सरकार की राजभाषा निश्चित करने का प्रश्न आया तो विशद विचार मंथन के बाद 14 सितंबर, 1949 को हिन्दी को भारत संघ की राजभाषा घोषित किया गया। भारत का संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ और तभी से देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी विधिवत भारत संघ की राजभाषा है। यदि संसद द्वारा अन्यथा निर्णय नहीं लिया जाता, तब 15 वर्षो बाद अर्थात 26 जनवरी, 1965 को अंग्रेज़ी का उपयोग आधिकारिक कार्यों के लिए समाप्त होना था। लेकिन अहिन्दी-भाषी राज्यों में मतभेद की सम्भावना को चौकस किये जाने का परिणामस्वरूप संसद द्वारा राजभाषा अधिनियम को अभिनीत किया गया, जिसमें आधिकारिक कार्यों के लिए अंग्रेज़ी के उपयोग को हिन्दी के साथ-साथ 1965 के बाद भी जारी रखने को स्वीकृति दी गई थी। परंतु, केंद्र सरकार को कानूनन अपने सरकारी काम में उत्तरोत्तर हिंदी का उपयोग करने की अवश्यकता है, जिसने इसे "अनुनय, प्रोत्साहन और सद्भावना" के माध्यम से करने की तय की है। तदनुसार धारा 3(3) में प्रावधान रखा गया है कि संघ के शासकीय दस्तावेजों हिन्दी तथा अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में जारी किए जाएंगे। राजभाषा अधिनियम के तहत देश में हिन्दी को राजभाषा के रूप में सुविदाजनक कार्यान्वयन के लिए पूरे देश को तीन क्षेत्रों में बांटा गया है। (1) क्षेत्र “क” से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड, राजस्थान, दिल्ली और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह संघ-राज्य-क्षेत्र अभिप्रेत है; (2) क्षेत्र “ख” से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ-राज्य-क्षेत्र अभिप्रेत हैं; (3) क्षेत्र “ग” से खंड (1) और (2) में निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय “ग” क्षेत्र में आता है। लेकिन यहां सरकारी कामकाज में हिन्दी का उपयोग सराहनीय है । यहां सब कर्मचारी व अधिकारी “क” क्षेत्र के कार्यालय की तरह अधिकांश काम हिन्दी में करते है। ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दी यहां के कर्मचारियों की रगों में समा गया है, और इसी का नतीजा है आप के हाथ में यथार्थ का यह पन्द्रहवां अंक। आजकल हस्तलिखित पत्रों का विकल्प ईमैल/वाट्सप/फ़ेसबुक इत्यादि, सन्देश भेजने का माध्यम स्थापित हो चुका है। बावजूद इसके, सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण ने मिल कर इस गृह पत्रिका “य़थार्थ” को पह स्वरूप दिया गया है।

एक बात और कहना आवश्यक होगा कि इस पत्रिका में छपी लेखों में जो भी विचार है, वे लेखक के अपने निजी विचार है, भारतीय खान ब्यूरो भुवनेश्वर क्षेत्रीय कर्यालय का औपचारिक विचार नहीं है।

हरकेश मीना

क्षेत्रीय खान नियंत्रक

उप संपादक की कलम से.....

हिंदी, राष्ट्र के बहुसंख्यक लोगों द्वारा बोली और समझी जाती है, इसकी लिपि देवनागरी है, जो अत्यंत सरल है| पंडित राहूल सांकृत्यायन के शब्दों में “हमारी नागरी लिपि दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपि है|” हिंदी में आवश्यकतानुसार देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को सरलता से आत्मसात करने की शक्ति है| यह भारत की एक ऐसी भाषा है, जिसमें पूरे देश में भावात्मक एकता स्थापित करने की पूर्ण क्षमता है|

वॉल्टर केनिंग ने कहा था विदेशी भाषा का किसी भी स्वतन्त्र राष्ट्र की राज-काज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दास्ता है| प्रत्येक देश की पहचान का एक मजबूत आधार उसकी अपनी भाषा होती है, जो अधिक से अधिक व्यक्तियों के द्वारा बोली जाने वाली भाषा के रूप में व्यापक विचार विनिमय का माध्यम बनती है| हिंदी देश की संपर्क भाषा तो है ही, इसे राजभाषा का वास्तविक सम्मान भी दिया जाना चाहिए, जिससे कि यह पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने वाली भाषा बन सके| जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता | हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की राजभाषा तो है, किन्तु इसे यह सम्मान सिर्फ़ सैद्धांतिक रुप में प्राप्त है, वास्तविक रूप में राजभाषा का सम्मान प्राप्त करने के लिए इसे अंग्रेजी से संघर्ष करना पड़ रहा है|

अत: आज देश के सभी नागरिकों को यह संकल्प लेने की आवश्यकता है कि वह हिंदी को अपनाकर और सभी कार्य क्षेत्रों में इसका अधिक से अधिक प्रयोग कर इसे व्यवहारिक रुप से राजभाषा बनने का गौरव प्रदान करेंगे|”

दयानन्द उपाध्याय
वरिष्ठ सहायक खान नियंत्रक एवं हिन्दी अधिकारी
भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेष्वर

विषय सूची

1.	भुवनेश्वर कार्यालय में हिन्दी की प्रगति....	5
2.	भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय का तिमाही रेपोर्ट	6
3.	हिंदि पखवाडा 2019- रूपरेखा...............	8
4.	हिंदी कार्यशालाएं 2019	11
5.	भुवनेश्वर में न.रा.का.स	13
6.	भुवनेश्वर में मेरी नियुक्ति	14
7.	पर्यावरण संरक्षण	15
8.	पर्यावरण	17
9.	प्रार्थना	18
10.	इंतजार कीजिए	19
11.	आत्म विश्वास	20
12.	संसार का शिरोमणी	22
13.	गीतोपदेश	23
14.	खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण	25
15.	पेड़ ने पूछा	30
16.	हिंदी भाषा पंडित वाणी	32
17.	आज हिंदी बोलने का शौक हुआ	34
18.	माननीय गृह मंत्रिजी का संदेश	36

भुवनेश्वर कार्यालय में हिन्दी की प्रगति

भुवनेश्वर कार्यालय भारतीय खान ब्यूरो के अहिन्दी प्रदेश के प्रदेश के कार्यालयों में से एक है. इस कार्यालय का लगातार यह प्रयास रहता है कि किस तरह हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य किया जाए और इस दिशा की ओर यथासंभव प्रयास भी किए जा रहे हैं एवं सकारात्मक परिणाम भी देखने को मिल रहे है. हिन्दी में हो रहे कार्यों की जानकारी को रखने के लिए, हिन्दी पत्राचार ठीक तरह से हो रहा है या नहीं, हिन्दी में कितना कार्य किया जा रहा है एवं अन्य हिन्दी संबंधी गतिविधियों पर ध्यान रखने के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति हर तीन माह में एक बैठक का आयोजन किया जाता है. जिस में त्रैमासिक क्रियाकलापों पर विचार-विमर्श कर हिन्दी की प्रगति हेतु निर्णय लिए जाते है.

इसके अतिरिक्त भी कार्यालय में अगर कोई बैठक होती है तो उस में भी हिन्दी का यथोचित प्रयोग किया जाता है. वर्ष 2018-19 में इस कार्यालय का पत्राचार जून, सितम्बर, दिसम्बर 2018 एवं मर्च,2019 को समाप्त तिमाही में क्रमश: 75%, 94%, 85% एवं 99% यानी कि लगभग 88% रहा. हिन्दी का विकास क नज़रिए से यह बहुत ही अच्छा रहा एवं विशिष्ठ उपलब्धि है.

वर्ष 2018-19 के दोरान हर छमाही में एक कार्यशाला आयोजन किया गया .हिंदी के विकास के लिए वर्ष 2019-20 में रू 5818 की हिंदी पुस्कत की खरीदारी कि गई इसके अतिरिक्त कार्यालय में चार हिन्दी की पत्रिकायें भी मंगाई जा रही है. प्रतिवर्ष की तरह कार्यालय से प्रकाशित की जाने वाली वार्षिक हिन्दी पत्रिका का 16वां अंक का सफल प्रकाशन किया गया. इस रेपोर्ट के लिखे जाने तक सत्रवाह अंक का प्रकाशन की तैयारी चल रही थी.

सितम्बर माह में दिनांक 06.09.2019 से 20.9.2019 तक हिन्दी पखवाडा मनाया जा रहा है. इस दौरान विभिन्न विषयों पर विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं है |

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन तिमाही रिपोर्ट

केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों/विभागों/संबद्ध व अधीनस्थ कार्यालयों/सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों/स्वायत्त निकायों आदि में राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट

जून -2019 को समाप्त तिमाही

भाग - I (प्रत्येक तिमाही में भरा जाए)

कार्यालय का नाम और पूरा पता : **भारतीय खान ब्यूरो,**149, **पोखरीपुट भुवनेश्वर** 751020

संबंधित राजभाषा अधिकारी का फोन नं. : **एस.टी.डी कोड 0674 फोन नं 2352490**

ई-मेल: ro.bhubaneshwar@ibm.gov.in

1. **राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत जारी कागजात*|**

(क) जारी कागजात की कुल संख्या : 4

(ख) द्विभाषी रूप में जारी कागजात की संख्या : 4

(ग) केवल अँग्रेज़ी में जारी किए गये काग़ज़ात : 0

* इनमें सामान्य आदेश, ज्ञापन, संकल्प, अधिसूचनाएं, नियम, करार, संविदा, टेंडर नोटिस. संसदीय प्रश्न, आदि शामिल हैं ।

2. **हिंदी में प्राप्त पत्र (राजभाषा नियम - 5) |**

(क) हिंदी में प्राप्त कुल पत्रों की संख्या : 66

(ख) इनमें से कितनों के उत्तर हिंदी में दिए गए : 0

(ग) इनमें से कितने के उत्तर अँग्रेज़ी के दिए गए : 0

(घ) इनमें से कितने के उत्तर दिए जाने अपेक्षित नहीं थे 66

#वास्तव में इनमें से ज्यादातर पत्रों का उत्तर देने की आवश्यकता ही नही होती है. जैसे कि अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त आकस्मिक अवकाश के आवेदन पत्र, मुख्यालय से प्राप्त पत्र के पृष्ठांकन आदि.

3. **अंग्रेजी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में दिए जाने (केवल 'क' एवं 'ख' क्षेत्र में स्थित कार्यालयों के लिए)**

लागू नहीं

4. **भेजे गये कुल पत्रों का ब्योरा |**

	हिंदी में	अँग्रेज़ी में	भेजे गए पत्रों की कुल संख्या
	1	2	3
'क' क्षेत्र को	32	0	32
'ख'क्षेत्र को	130	12	142
'ग'क्षेत्र को	510	15	525

5 (तिमाही के दौरान) फाईलो/दस्तावेजो पर लिखी गई टिप्पणी तिमाही के दौरान लिखी गई टिप्पणियां

हिंदी में लिखी गई टिप्पणियों के पृष्ठों की संख्या : **95**

अंग्रेजी में लिखी गई गई टिप्पणियों के पृष्ठों की संख्या : **112**

कुल टिप्पणियों के पृष्ठों की संख्या : **207**

* पृष्ठों की संख्या की गणना पूर्ण अंक एवं आधा अंक में ही किया जाए |

6. हिंदी कार्यशालाएं |

पिछले तिमाही के दोरान एक पूर्ण दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

नोट : कार्यालय के समस्त क्रमिको को 2 वर्ष में कम से कम एक बार प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है |

(क) **विभागीय/संगठनीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक के आयोजन की तिथि 10.04.2019**

(ख)राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की तिथि .....लागू नहीं ....
(केन्द्रीय प्रधान कार्यालय की)

(ग) अधीनस्थ कार्यालय में गठित राजभाषा कार्यान्वयन समितियो की संख्या ...लागू नहीं ....

(घ) इस तिमाही में आयोजित बैठकों की संख्या ....एक ....

(ङ) बैठकों से संबंधित कार्यसूची और कार्यवृत क्या हिंदी में जारी किए गए ....हाँ...............

7. हिंदी सलाहकार समिति की बैठक के आयोजन की तिथि ...... लागू नहीं**.................**
(केवल मंत्रालयों/विभागों के लिए)

8. तिमाही में किए गए उल्लेखनीय कार्य/उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण (अधिकतम 250 कैरेक्टर)

1.वर्ष 2019-20 के लिए हिंदी पुस्तक की खरीद हेतु आवश्यक कारवाई की गई |

उल्लिखित सूचना उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर बनाई गई है तथा मेरी जानकारी के अनुसार सही है |

मंत्रालय/विभाग/संगठन की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष के हस्ताक्षर

अध्यक्ष का नाम हरकेश मीना
पदनाम क्षेत्रीय खान नियंत्रक
फोन नम्बर 0674-2352490 / 2352463
फैक्स नम्बर 0674-2352463
ई-मेल का पत्ता ro.bhubaneshwar@ibm.gov.in

नोट : 1.कोई भी कॉलम खाली न छोड़ा जाए और सूचना स्पष्ट रूप से दी जाए ।

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा
रूपरेखा

दिनांक 06.09.2019 से 20.09.2019

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय ,भुवनेश्वर में दिनांक 06 सितम्बर, 2019 से 20.09.2018 तक राजभाषा हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन हर्षोल्लास पूर्वक मनाया जा रहा है | इस दौरान राजभाषा

हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं उतरोतर प्रगति हेतु मुख्यालय से प्राप्त निर्देशों की अनुपालन करते हुए विभिन्न प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमे कार्यालय के अधिकारियों एव कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग ले रहे है |

हिंदी संपर्क अधिकारी श्री दयानन्द उपाध्याय ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक अभिनंदन एवं सरस्वती वंदना कर इस समारोह का संचालन किया |

हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह का शुरुआत श्रीमती एम्. मोहंती के द्वारा मुख्य अतिथिगण श्री नवीन कुमार सिंह ,मुख्य सामग्री प्रबंधक , पूर्वी तट रेलवे, एवं क्षे.खा.नी. श्री हरकेश मीना को पुष्पगुच्छ से स्वागत किए जाने से हुई तत्पश्चात मुख्य अतिथि गण एवं क्षे.खा.नी. के द्वारा दीप प्रज्वलित कर हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया|

क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री हरकेश मीना ने सभी का स्वागत करते हुए समारोह को संबोधित किए तथा किस तरह 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ इसकी पृष्ठभूमि प्रस्तुत की गई | हिंदी के विकास के लिए गृह मंत्रालय के द्वारा लिए गए कदम यहाँ तक की तकनीकी क्षेत्र में भी अब हिंदी का उपयोग हो रहा है इन सब बातों से सभी को अवगत कराते हुए हिंदी के विकास में पखवाड़ा का महत्व को समझाया तथा सभी कर्मचारी एवं अधिकारी से यह अपील किया की सभी इस पखवाड़ा में बढ़-चढ़कर भाग ले | तत्पश्चात श्री नवीन कुमार सिंह ,मुख्य सामग्री प्रबंधक , पूर्वी तट रेलवे ने समारोह को संबोधित करते हुए अपने व्यक्तिगत अनुभव को साझा करते हुए हिंदी के महत्व को समझाया तथा सभी को सभी भाषा के ज्ञान होना चाहिए इसके महत्व को समझाया तथा रोजमरा के कार्य में हिंदी का कैसे उपयोग कर सकते है यह बताते हुए अपने संबोधन की समाप्ति किए |

अंततः हिंदी संपर्क अधिकारी श्री दयानन्द उपाध्याय ने पखवाड़ा के दौरान आयोजित होने वाली प्रतियोगिता का रूप रेखा प्रस्तुत किये जो निम्ना प्रकार है।

दिनांक	कार्यक्रम	संयोजक
06.09.2019 शुक्रवार	उद्घाटन समारोह प्रात: (11.00 बजे)	श्री डी. उपाध्याय , व.स.खा.नि श्री पी.एम. सुन्दरेश्वर, स. प्रशानिक अधिकारी, श्री एम.मिश्र, अ.श्रे.लि.
10.09.2019 मंगलवार	निबंध लेखन	श्री जीतेन्द्र प्रधान, स.ख.अभियंता श्रीमती एम. मोहांति, अ.श्रे.लि.
11.09.2019 बुधवार	टिप्पण व प्रारूप लेखन	श्री पी.एम. सुन्दरेश्वर, स. प्रशासनिक अधिकारी श्री ए.के.पाणी, स.ख.अभियंता
12.09.2019 गुरुवार	सुलेख	श्री डी. उपाध्याय, व.स.खा.नि श्रीमती सलिला दाश, आशुलिपिक
13.09.2019 शुक्रवार	हिंदी में विचार-विमर्श (विषय ड्रा द्वारा)	श्री एस मंजुमदार, व.ख.भू. श्री सोमनाथ घोष, क.स.
16.09.2019 सोमवार	प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता (विकल्प)	श्री रामकिशन, व.स.खा.नि श्री आशीष नारायण, क. सा.आ
17.09.2019 मंगलवार	श्रुति लेख	श्री जी. सी. शेठी, उप खान नियंत्रक श्री एस.के. महापात्र, स.ख.अभियंता
18.09.2019 बुधवार	अनुवाद (अंग्रेजी से हिन्दी)	श्री प्रशान्त कुमार साहू, स.ख.अभियंता अमरदीप आर्य , भण्डार लिपिक
19.09.2019 गुरुवार	वाद-विवाद प्रतियोगिता	श्री केवल किशन , क्षे.ख.भू. श्री आर.सी.दास , क. सा.आ श्री बी स्वाईन, अ.श्रे.लि.
20.09.2019 शुक्रवार	समापन, पुरस्कार वितरण समारोह एवं हिंदी पत्रिका 'यथार्थ' का विमोचन	श्री डी. उपाध्याय , व.स.खा.नि श्री पी.एम. सुन्दरेश्वर, स. प्रशानिक अधिकारी श्री एम.मिश्र, अ.श्रे.लि.

उद्घाटन समारोह का समापन श्री दयानन्द उपाध्याय द्वारा एक कविता के माध्यम से तथा श्री एम् मिश्र , अवर श्रेणी लिलिप के धन्यवाद प्रस्ताव उपरांत किया गया |

हिंदी पखवाड़ा काफी हर्षोल्लास से संयोजक के देख रेख में हिंदी एवं गैर हिंदी दो श्रेणी में कार्यालय के सभाकक्ष में मनाया जा रहा है कार्यालय के कार्य के बिच पखवाड़ा के लिए समय निकालते हुए सभी अधिकारी एवं कर्मचारी इसमें भाग ले रहे है |

भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन

हिंदी कार्यशाला

दिनांक 11.03.2019 एवं 26.08.2019

भारतीय खान ब्यूरो, भुवनेश्वर में, मार्च एवं सितम्बर, 2019 को समाप्त छमाही के लिए, क्रमश: दिनांक 11 मार्च एवं 26 अगस्त, 2019 को ,राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने तथा राजभाषा संबंधी अधिनियमों , नियमों एवं आदेशों के अनुपालन हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन सभागार (आडिटोरिएम) में किया गया।

11 मार्च हुए हिंदी कार्यशाला में चार अधिकारी एवं 4 कर्मचारी को प्रशिक्षण दिया गया | कार्यशाला का उदघाटन समारोह दिनांक 11.03.2019 को पूर्वाह्न 10.30 बजे क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री हरकेश मीना द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया | कार्यशाला का प्रथम एवं दूसरा व्याख्यान 11.00 बजे से 12.15 एवं 12.15 से 1.30 तक "राजभाषा नियमावली तथा "कार्यालय कार्य में हिंदी का उपयोग पर श्री रंजीत कुमार सिंह, हिंदी अधिकारी, कैंद्रीय लोक निर्माण विभाग, पोखरिपुट, भुवनेश्वर द्वारा लिया गया पुन: भोजन अवकाश के बाद तीसरा व्याख्यान 2.30 से 3.45 एवं चौथा व्याख्यान 3.45 से 5.00 तक क्रमश राजभाषा निति एवं सेवा पंजी में हिंदी प्रविष्टि विषय पर श्री नारायण दास,मावतवाल हिंदी अधिकारी अधिकारी, दूरदर्शन केन्द्र, भुबनेश्वर, द्वारा दिया गया |

26 अगस्त को हुए हिंदी कार्यशाला में, दो अधिकारी एवं छ: कर्मचारी को प्रशिक्षण दिया गया | कार्यशाला का उदघाटन समारोह दिनांक 26.08.2019 को पूर्वाह्न 10.30 बजे क्षेत्रीय खान नियंत्रक श्री हरकेश मीना द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया |

कार्यशाला का प्रथम एवं दूसरा व्याख्यान 11.00 बजे से 12.15 एवं 12.15 से 1.30 तक "कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप तथा "लेखन अशुद्धियाँ और उनका निराकरण पर श्री नारायण दास मावतवाल, हिंदी अधिकारी, दूरदर्शन केन्द्र भुवनेश्वर द्वारा दिया गया | तीसरा व्याख्यान 2.30 से 3.45 एवं चौथा व्याख्यान 3.45 से 5.00 तक क्रमश सरकार की राजभाषा निति एवं साँचा अभ्यास: मसौदा प्रस्तुत है एवं सूचना भेजने की कृपा करे विषय पर श्री पी.एम्.सुन्देश्वर सहायक प्रशासनिक अधिकारी, भारतीय खान ब्यूरो , भुवनेश्वर द्वारा दिया गया |

कार्यशाला में हुए सभी व्याख्यानों को प्रशिक्षणार्थीयों ने बड़े ही ध्यानपूर्वक सुना एवं उसे ध्यानमग्न किया जो की प्रशिक्षणार्थीयों के लिए काफी फायदेमंद रहा |

Government of India
Ministry of Mines
Indian Bureau of Mines
Regional Office
BHUBANESWAR

भारत सरकार
खान मंत्रालय
भारतीय खान ब्यूरो
क्षेत्रीय कार्यालय
भुवनेश्वर
Government of India
Ministry of Mines
Indian Bureau of Mines
Regional Office
BHUBANESWAR

खान मंत्रालय
क्षेत्रीय कार्यालय
भुवनेश्वर
Government of India
Ministry of Mines
Indian Bureau of Mines
Regional Office
हिंदी कार्यशाला

Government of India
Ministry of Mines
Indian Bureau of Mines
Regional Office

खान मंत्रालय
भारतीय खान ब्यूरो
क्षेत्रीय कार्यालय
भुवनेश्वर
Ministry of Mines
Indian Bureau of Mines
Regional Office
BHUBANESWAR
हिंदी कार्यशाला

भुवनेश्वर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भुवनेश्वर के द्वारा ना.रा.का. स. स्तर पर उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन श्रेणी में होने वाले प्रतियोगिता के लिए हमारे कार्यालय से गृह प्रत्रिका “यथार्थ” की प्रति प्रेषित की गई तथा 21 से 23 अगस्त,2019 को हुई टिप्पणी लेखन एवं अनुवाद प्रतियोगिता में हमारे कार्यालय से श्री एम्.मिश्र , अवर श्रेणी लिपिक एवं श्री अमरदीप आर्य , प्रतिभागियों ने भाग लिए |

भुवनेश्वर में
मेरी नियुक्ति

अमरदीप आर्य, भण्डार लिपिक

वर्ष 2017 कर्मचारी चयन आयोग के द्वारा भण्डार लिपिक के पद पर चयनित होने के बाद मुझे भारतीय खान ब्यूरो (खान मंत्रालय), मुख्यालय नागपुर में मुझे दस्तावेज जाँच के लिए बुलाया गया, जहाँ सारे जाँच परिक्रिया पूर्ण होने के उपरांत, मुझे नियुक्ति पत्र मिलने में थोडा विलम्ब हुआ, मंत्रालय में भण्डार लिपिक के पद को उपग्रेड होने के कारण, इस कारण मैं हताश, निराश और परेशान भी काफी रहा, इसी को लेकर मैं नागपुर(अपने मुख्यालय) जाना हुआ 21 मई 2018 को और बहुत ही प्रयत्न के बाद मेरा मिलना डा० निरंजन कुमार सिंह (जो वर्तमान समय के CG थे) से मिलना हुआ, उन्होंने में पूरी परेशानी को समझा और इस पर आश्वसन देते हुए पुनः विचार करने के बारे में कहा । इस दौरान मैं खान मंत्रालय दिल्ली में कुमार अमरेन्द्र सर(सेक्शन ऑफिसर, वर्तमान समय के) और अथिरा मैम (डायरेक्टर, वर्तमान समय के) से भी मिला, अंततः वर्ष 2019 के मई माह में मुझे नियुक्ति पत्र मिला, और जिस जगह मुझे नियुक्ति मिला वह जगह था "भुबनेश्वर" । पर विलम्ब के दौरान मैं यह सोच रहा था कि काश मुझे नियुक्ति अगर देहरादून में मिले तो बहुत अच्छा रहे क्योकि मुझे प्राकृतिक जगहों पर रहना बहुत पसंद है खास कर पहाड़ी (ठंढ प्रदेश) जगहों पर परन्तु यह हो न सका। पर कहते है न कि ईश्वर जब आपको अपने मन से देते है तो आपके सोच से ऊपर ही देते है जो आपके लिए अच्छा होता है और सच कहू तो मेरे साथ कुछ एसा ही हुआ। मुझे नियुक्ति पत्र मिला और मेरी पोस्टिंग थी भुवनेश्वर में, भुबनेश्वर में यह मेरा पहला आगमन था, जिस दिन मैं नियुक्त होने के लिए अपने कार्यालय आ रहा था, आज मैं काफी खुश भी था और थोडा डरा हुआ भी। 15/05/2019 को मैं भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय भुबनेश्वर में भण्डारण लिपिक के पद पर पद भार ग्रहण किया। मुझे अपने कार्यालय में सभी अधिकारीयों का भरपूर सहयोग मिलता है, मुझे यहाँ पे सुन्देश्वर सर, दयानंद उपाध्याय सर और महेश्वर मिश्रा सर अभिवावक मिले तो सोमनाथ घोष सर, आशीष नारायण सर और प्रशांत सर जैसे बड़े भाई। यहाँ मुझे सुन्दरेश्वर सर और मिश्रा सर महेशा कुछ न कुछ सिखाते रहते है, सुन्दरेश्वर सर किताबों के बारे में बताते कि ये पुस्तक पढो यह आपके काम का है और वैसे भी मुझे सर के हाव भाव से भी बहुत कुछ सिखने को मिलता है खास कर उनके काम करने का तरीका और हर तरह से अपने आपको किसी भी कार्य में परिपूर्ण बनाना, इनकी ये खासियत मुझे बहुत पसंद है। मिश्रा सर भी मुझे किसी भी चीज के बारे में बहुत अच्छे से समझाते है, दयानंद सर मुझे हिंदी के लिए बहुत प्रोत्साहित करते है और हिंदी के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा भी देते है, इन सभी चीजो के प्रेरणा श्रोत हमारे क्षेत्रीय खान नियंत्रक महोदय श्री हरिकेश मीना सर है । घोष सर और आशीष सर मुझे अपने छोटे भाई के तरह प्यार करते है इन दोनों के साथ तो मैं बिलकुल एक परिवार कि तरह हो चूका हूँ अब तो मैं इनसे किसी भी परेशानियों में आराम से बात कर सकता हूँ। प्राकृत दृष्टि कोण से भी भुवनेश्वर बहुत अच्छा शहर है पूरी हरियाली है और यहाँ के लोग भी बहुत अच्छे है।

हम जहाँ रहते है उस की चारों ओर को पर्यावरण कहते है | हमें अच्छी तरह से ज़ीने के लिए उसका संरक्षण करना जरूरी है, पर्यावरण को संरक्षण करने के लिए हमें बहुत सारे कदम उठाना होगा , पहले तो प्रकृति का दिया गया सभी वास्तु को यथावत रखना होगा जैसा की जंगल , पहाड़, समुद्र एवं वायु |

अभी हाल ही में मैंने एक स्कूल में दोपहर को गया था , भुवनेश्वर के उस स्कूल के सामने दस-बारह पेड़ लगाया गया था मैंने देखा छोटे-छोटे उस पेड़ के नीचे एक-एक लोग खड़े हुए थे धूप से बचने के लिए, एक पेड़ के नीचे एक आदमी खड़ा हो सकता था यानी की दस-बारह पेड़ के नीचे केवल दस बारह लोग ही खड़े पाएँगे , बाकी लोग वैसे ही छाव का तलाश कर रहे थे इससे आप समझ गए होंगे की हमारे दैनिक जीवन में पेड़ पौधे का कितना अहमियत है |

पहले भुवनेश्वर का तापमान इतना नहीं था अब तो देश की सबसे गर्मी सबसे अधिक तापमान बाली शहर में से भुवनेश्वर एक है इसका कारण यह है की शहर का आबादी तेजी से बढ़ रहा है उसके साथ-साथ यहाँ का हरियाली धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है पेड़ पौधे विकास के नाम पर कट रहे है अब तो यह एक कंकरीट जंगल बन गया है हर घर में ए.सी., हर वाहन में ए.सी. , वातावरण में गरम हवा |

ऋतु परिवर्तन हो रहा है ग्रीष्म ऋतु में बारिश हो रहा है सर्दी में गरमी लग रहा है यह सब पर्यावरण का ठीक से संरक्षण नहीं होने से हो रहा है |

केरल में बाढ़ , उतराखंड में पहाड़ का धसना , कश्मीर घाटी में बाढ़ आना आदि यह सब असंतुलित व्यवस्था की वजह से हो रहा है |विश्व उन्नतिकरण के वजह से बर्फ पिघल कर समुद्र में पाणी का स्तर बढ़ रहा है मुम्बई जैसे शहर में सुन्दर का पाणी घुस रहा है |

गंगा नदी के किनारे बहुत सारे शिल्पायन के वजह से उत्तराखंड में केदारनाथ में भूस्लखन होने से वहाँ बाढ़ आ गई अगर वहाँ नदी के किनारे बोनियाँ निर्माण नहीं होता तो शायद वहाँ प्रकृति का ऐसा तांडव देखने को नहीं मिलता | आजकल कम से कम बारिश में भी शहर , गाँव की अंदर रस्ते पर चलना मुश्किल होता है चारों ओर पानी ही पानी शहर की विकाश करने वाले जब मकान बनाते है तो प्राकृतिक नदी या केनाल को बंद कर देते है पानी जाने का रास्ता रुक जाने से घर में पाणी घुसता है समुद्र किनारे सी-बिच बहुत सारे होटल बनते है उन सबका नाला का पाणी समुद्र

में जाने से वहाँ जा जीव, मछली , नष्ट हो जाते है सब कुछ बिगड़ जाता है |

बड़े-बड़े कारख़ानों से निकला धुआं वायुमंडल को प्रदूषित करता है सूर्य से आने वाले रोशनी ठीक से पृथ्वी पर पहुँच नहीं पाता ,वायु प्रदूषण से पर्यावरण ओर बिगड़ जाता है मनुष्य की शारीर में तरह-तरह का बीमारी फैल जाता है |

हम अगर ठीक रहेंगे तो पर्यावरण का संरक्षण हो पायेगा हमें पेड़-पौधो लगाना होगा | कारख़ानों का धुआं को वि शोधन करने के बाद वाहन छोड़ना होगा | मकान बनाने समय सारे नियम को ठीक से पालन करना होगा | प्रकृति को अगर हम न बचाएंगे तो पर्यावरण का संरक्षण नहीं हो पाएगा |

दिल्ली जैसे शहर में हर एक आदमी ऑफिस जाने के लिए वाहन का उपयोग करते है , एक आदमी के लिए एक गाड़ी | इसलिए वहाँ इतना वायु प्रदूषण | दूर-दूर तक पेड़ पौधे दिखाई नहीं देते प्लास्टिक, पोलीथिन का व्यवहार को निषेध करना होगा पोलीथिन के वजह से जल प्रदूषण होता है सबसे भयंकर बीमारी वहीं से होता है |

पर्यावरण का संरक्षण करना मनुष्य के हाथ में है अगर वह चाहेंगा तो हर तरह का प्रदूषण को रोक सकता है नहीं तो उसे भगवान भी बचा नहीं पायेंगे , उसे मोबाइल का इस्तेमाल कम से कम करना होगा अब तो 5 जी. आने बाला है उसे बहुत सोच समझकर कदम लेना पड़ेगा | विकास के नाम पर परमाणु का व्यवहार पर रोक लगाना होगा अगर सारे देश मिलकर काम करेंगे तो पर्यावरण का संरक्षण अवश्य हो पायेगा |

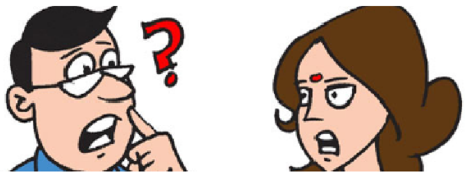

रमन की पत्नी बादाम_खा रही थी...।

....

रमन- मुझे भी टेस्ट कराओ।

....

पत्नी ने एक बादाम रमन के हाथ में रख दी, बाकि खुद खाने लगी।

....

रमन बोला- बस एक ही...!

....

पत्नी ने झल्लाकर कहा- हां, बाकी सबका टेस्ट भी ऐसा ही है...।

प्रकृति का न करे हरण
आओं बचाए पर्यावरण |

पर्यावरण का रखे ध्यान
तभी बनेगा देश महान |

पेड़-पौधा मत करो नष्ट ,
साँस लेने में होगा कष्ट |

हम सब का एक हो नारा
साफ सुथरा रहे देश हमारा |

आओं इनसे प्यार करे
मिलकर हरा भरा संसार करे

वनरोपण एवं पर्यावरण संरक्षण हम सब करे |

रद्दी वाला : साहिब पेपर है तो दे दीजिए।
साहिब : मेमसाहब नहीं हैं, मायके गई हैं, कल आना।
रद्दी वाला : अच्छा फिर खाली बोतलें ही दे दीजिए।

जीवन रण में भेजा है प्रभु मेरा साथ निभा देना ,
घोर निराशा में जब भटकूं जीवन सुधा पिला देना।

बीच मरुस्थल में मैं प्यासा जब आशंकित हो जाऊं।
मृगमरीचिका सी माया में दिशा भ्रमित हो खो जाऊं।
उचित मार्गदर्शन की दाता कुछ बूंदे बरसा देना।।

घोर निराशा.....

खो जाऊं यदि बेहद कांटेदार विचारों के वन में;
आसन ले लें दुर्बलतांए और वासनांए मन में।
जीवन के उद्देश्य प्रति प्रभु निष्ठा पुन: जगा देना।।

घोर निराशा.....

यदि ऐसा हो मैं भवसागर में तुमसे बिसरा जाऊं।
स्वयं चुने कुछ प्रश्नों के हल ना पाकर घबरा जाऊं।
अंतस में प्रेरक बनकर तुम जीवन दिव्य बना देना।।

घोर निराशा.....

प्रेम एक भावनात्मक क्रिया है, जो मनुष्यों को स्वतः हो जाता है. परन्तु ज्यादा तर नवयुवक अपने career पे ध्यान न देकर ज्यादा समय अपने प्रेम को देते है | ये कविता मैंने तब लिखी जब, मैं भी इस दौर से गुजर रहा था कविता का शीर्षक है "कुछ कर रहा हूँ मैं कुछ तू भी इंतज़ार तो कर.... "

कुछ देर और मेरी मोहब्बत पर एतवार कर,
कुछ कर रहा हूँ मै कुछ तू भी इंतजार तो कर।

जुदाई है मजबूरी हमारी रजा नहीँ,
कुछ देर और बस तन्हाईयों से प्यार कर।

मुझ से ही कर लेना सब शिकवे शिकायत,
बे कदर जमाने से गम का इजहार न कर।

चाँद मे ही देखा करु वक्त बेवक्त तुझे,
मिलना हो 'अमर' से तू भी चाँद का दीदार कर।

.... अमरदीप आर्य Nov 2015

एक कहावत है की अगर आपमें आत्मविश्वास है तो किसी भी काम को करने से पहले ही 50% तो वही आपकी जीत हो जाती है और अगर आत्मविश्वास की कमी है तो आधी लड़ाई तो हम बिना लडे ही हार जाते है. रोजमरा की जिन्दगी में हमे ऐसी बाते कई बार सुनने को मिलती है की सफलता या कुछ पाने के लिए आत्म विश्वास का होना बहुत जरुरी है. ऐसी बाते हमे प्रेरित भी करती है और फिर हम अपने अन्दर के आत्म विश्वास को बढ़ाने के लिए तरह तरह के तरीके अपनाते है या तरीके ढूंढते है. लेकिन क्या ऐसा कर पाने में सफल होते है ??.. शायद बहुत से लोग हो जाते है और उतने ही लोग नहीं हो पाते. असल में बहुत से लोग आत्म विश्वास का ठीक मतलब ही नहीं जान पाते.

आत्मविश्वास का मतलब अपने ऊपर विश्वास से बिलकुल भी नहीं है. अपने ऊपर ज्यादा विश्वास भी एक तरह का अन्धविश्वास है क्योकि कोई भी इंसान हर जगह सही नहीं हो सकता.. और जब वह ऐसा सोचता है की वो हर मामले में सही है तो वे कुछ नया सिखने से कतराते है और अपनी गलतियों को दोहराते है. आत्मविश्वास का अर्थ अपने ऊपर विश्वास से नहीं बल्कि अपनी काबिलियत के ऊपर विश्वास से है. जब इंसान को यह लगने लगे की वह किसी काम को सिर्फ कर ही नहीं सकता बल्कि दिक्कत पड़ने पर डटा रह सकता है तो वही उसके आत्म विश्वास की सही निशानी हो जो उसे किसी भी कठिनाई में झुकाती नहीं है.

अब सवाल उठता है की क्या आत्म विश्वास जन्म से निर्धारित होता या समय के साथ आता है??. अगर आत्मविश्वास की कमी है तो कैसे इसे मजबूत कर सकते है??. दरअसल आत्म विश्वास भी हमारे लाइफस्टाइल का एक हिस्सा है जो एकदम से डेभलप नहीं हो जाता. यह एक आदत है और इस आदत को हमेशा के लिए बनाये रखने के लिए आपको नीचे से ऊपर की ओर काम करना होगा. यानी छोटे-छोटे कदम पूरी मंजिल और पूरा रिजल्ट देंगे. यानी एक स्वस्थ्य जीवन शैली अपनाना होगा.

आत्मविश्वास कैसे बढाएं

अपनी जीवनशैली को बदलना:

जीवनशैली यानी रोजमरा की जिन्दगी को जीने का तरीका हमारी सोच, हमारा व्यवहार और हमारी पहचान तय करता है. जीवनशैली में मानसिक और शारीरिक स्वस्थ्य रहने के सभी तरीके शामिल है जैसे एक्सरसाइज, योगा, टाइम पर काम करना, आदि. इससे हमारा दिमाग तरोताजा रहता है, डर दूर होता, चेतना डेभेलप होती है और नय-नय विचार आते है.

सकारात्मक और आशा वादी दृष्टिकोण का होना:
इंसान की सोच एक ऐसी चीज है जो उसे डूबा भी सकती है और उसकी डूबती नाव को पार भी लगा सकती है. आज जितने भी बड़े अधोगति और साइंटिस्ट है उनके पास एक नई सकारात्मक सोच के अलावा कुछ नहीं था. इसलिए किसी भी काम को शुरू करने से पहले न शब्द से कभी शुरुआत नहीं करे. समस्या के बारे में ज्यादा सोचने की बजाय समाधान के बारे में ज्यादा सोचे. जैसे अगर कोई परेशानी सामने आती है तो ज्यादा सोचने की बजाय की ऐसा क्यों हुआ, यह सोचे की कैसे इसे सही किया जा सकता है. अगर मन में विचार आये की मै यह नहीं कर सकता तो इसका ठोस जवाब ढूंढे की मैं यह क्यों नहीं कर सकता. मेरे अन्दर किस बात की कमी है. इससे आप हर स्थिति में विश्वास महसूस करेंगे.

अपने गुणों और ताकत के बारे में पता लगाए:
हर व्यक्ति के अन्दर कोई न कोई ऐसी खास बात जरूर होती है जो उसे दूसरों से अलग करती है. जिस बन्दे को उसकी काबिलियत का पता चल जाये उसे बड़ी से बड़ी मुसीबत भी नहीं रोक सकती. और जिस इंसान को इसका न पता चले, ऐसे में या तो वों भटकता रहता है या दूसरों की नक़ल करता है या उनके जैसे बनने या करने की कोशिश करता है बगैर ये जाने की क्या वों यह काम कर सकता है, क्या उसे भी इस काम को करने में उतना ही अच्छा लग रहा है जितना दूसरों को अच्छा लग रहा है या क्या वों इस काम को करके सफल हो पायेगा. ऐसे लोगों में आत्म विश्वास की काफी कमी होती है इसलिए वे अपनी मंजिल का सही चुनाव नहीं कर पाते और समय बीतने के बाद पछताते है की काश ऐसा नहीं किया होता.

अपने अन्दर की नकारात्मकता को खत्म करना:
नकारात्मक सोच जैसे दूसरों से जलन, अपने अन्दर और दूसरों के अन्दर खा मियां निकालना, असंतुष्ट और दुखी रहना, काम को करने से पहले ही डर जाना या हार मान लेना, हर चीज में बुराइयों को ज्यादा देखना कुछ ऐसे रोड़े है जो हमारे आत्म विश्वास को बुरी तरह से गिराते है. ऐसे लोगों को न अपने ऊपर विश्वास होता है और न दूसरों के ऊपर. ऐसे में मन में संदेह हमेशा बने रहते है. जहाँ संदेह और नकारात्मकता रहती है वहां किसी भी तरह का विश्वास और सकारात्मकता नही होती. इसलिए बुराइयों को नज़रअन्दाज करे और अच्छाइयों पर ज्यादा ध्यान करे.

मधुछंदा महांती

जहाँ हर धर्म के विश्वासी खुशी से रहते है |
जहाँ लोग खुल कर बातें करते है |
जहाँ शब्द सच की गहराइयों से निकलते है
जहाँ हर तरफ ईश्वर की चर्चा होती रहती है
जहाँ करोड़ो लोग आपस में भाईचारा से चलते है
जहाँ सत्य, अहिंसा और धर्म का डेरा बसता है
जहाँ ऋषि मुनि अपने प्रभु की माला जपते है
जहाँ हर त्यौहार खुशी से मनाया जाता है
जहाँ प्रेम और हंसी खुशी का चारों तरफ डेरा लगता है
जहाँ हर व्यक्ति गौरव और स्वाभिमान से जीते है

जो गांधी, तिलक , सुभाष चन्द्र बोस व्यवहार का डेरा हो,
जियों और जीने दो का , जहाँ संदेश दिया जाता है
वह महान देश हिन्दुस्तान हमारा है
जिसके आगे हमारा सर प्रेम से झुकता है
वह मेरा देश भारत है
ये मेरी मात्रभूमि सदा तेरी जय हो, सदा विजय हो
हजार नदिया जिसकी गोदी में खिलते है
हर मजहब धर्म के लोग वैर नहीं, शांति से वास करते है
जहाँ विविधता में एकता है
जहाँ प्रकृति उसकी सुन्दरता पाई जाती है
जहाँ चारों तरफ मैदान गिरी वन हरियाली है
जिसका मुकुट हिमालय है
संसार का शिरोमणि स्वर्ग सा देश व मेरा भारत है

- सदैव संदेह करने वाले व्यक्ति के लिए प्रसन्नता ना इस लोक में है ना ही कहीं और।
- क्रोध से भ्रम पैदा होता है. भ्रम से बुद्धि व्यग्र होती है. जब बुद्धि व्यग्र होती है तब तर्क नष्ट हो जाता है. जब तर्क नष्ट होता है तब व्यक्ति का पतन हो जाता है।
- ज्ञानी व्यक्ति ज्ञान और कर्म को एक रूप में देखता है, वही सही मायने में देखता है।
- जो मन को नियंत्रित नहीं करते उनके लिए वह शत्रु के समान कार्य करता है।
- अपने अनिवार्य कार्य करो, क्योंकि वास्तव में कार्य करना निष्क्रियता से बेहतर है।
- आत्म-ज्ञान की तलवार से काटकर अपने ह्रदय से अज्ञान के संदेह को अलग कर दो. अनुशाषित रहो. उठो।
- मनुष्य अपने विश्वास से निर्मित होता है. जैसा वो विश्वास करता है वैसा वो बन जाता है।
- नर्क के तीन द्वार हैं: वासना, क्रोध और लालच।
- इस जीवन में ना कुछ खोता है ना व्यर्थ होता है।
- मन अशांत है और उसे नियंत्रित करना कठिन है, लेकिन अभ्यास से इसे वश में किया जा सकता है।
- निर्माण केवल पहले से मौजूद चीजों का प्रक्षेपण है।
- व्यक्ति जो चाहे बन सकता है यदी वह विश्वास के साथ इच्छित वस्तु पर लगातार चिंतन करे।
- उससे मत डरो जो वास्तविक नहीं है, ना कभी था ना कभी होगा. जो वास्तविक है, वो हमेशा था और उसे कभी नष्ट नहीं किया जा सकता।
- ज्ञानी व्यक्ति को कर्म के प्रतिफल की अपेक्षा कर रहे अज्ञानी व्यक्ति के दीमाग को अस्थिर नहीं करना चाहिए।
- हर व्यक्ति का विश्वास उसकी प्रकृति के अनुसार होता है।
- जन्म लेने वाले के लिए मृत्यु उतनी ही निश्चित है जितना कि मृत होने वाले के लिए जन्म लेना. इसलिए जो अपरिहार्य है उस पर शोक मत करो।
- किसी और का काम पूर्णता से करने से कहीं अच्छा है कि अपना काम करें, भले ही उसे अपूर्णता से करना पड़े।
- प्रबुद्ध व्यक्ति सिवाय ईश्वर के किसी और पर निर्भर नहीं करता।
- बुद्धिमान व्यक्ति कामुक सुख में आनंद नहीं लेता।
- जो कार्य में निष्क्रियता और निष्क्रियता में कार्य देखता है वह एक बुद्धिमान व्यक्ति है।

- कर्म उसे नहीं बांधता जिसने काम का त्याग कर दिया है।
- बुद्धिमान व्यक्ति को समाज कल्याण के लिए बिना आसक्ति के काम करना चाहिए ।
- जब वे अपने कार्य में आनंद खोज लेते हैं तब वे पूर्णता प्राप्त करते हैं।
- वह जो सभी इच्छाएं त्याग देता है और “मैं” और “मेरा” की लालसा और भावना से मुक्त हो जाता है उसे शांती प्राप्त होती है।
- केवल मन ही किसी का मित्र और श त्रु होता है।
- जीवन न तो भविष्य में है न अतीत मैं ,जीवन तो बस इस पल मैं है ।
- जिसके लिए सुख दुःख , मान अपमान सामान है वही सिद्ध पुरुष है।
- हमें अपने जीवन में मेहनत करना चाहिए दूसरों के जीवन की उन्नति और सफलता को भूला कर अपने जीवन से नकारात्मक विचारों को दूर कर अपने भाग्य को उज्जवल बनाना चाहिए
- एक उपहार तभी अलसी और पवित्र है जब वह हृदय से किसी सही व्यक्ति को सही समय और सही जगह पर दिया जाये, और जब उपहार देने वाला व्यक्ति दिल में उस उपहार के बदले कुछ पाने की उम्मीद ना रखता हो।
- अगर आप अपने लक्ष्य को पाने के लिए दृढ़ सकल्प ले लेते हैं और दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं तो आपके रास्ते में जितने भी संकट/मुश्किलें आयें, आप उनको पार कर जायेंगे।
- हमें हमेशा सकारात्मक चीजों को देखना चाहिए और सकारात्मक सोच रखना चाहिए क्योंकि यह हमारे अस्तित्व को लोगों के सामने व्यक्त करता है।
- जीवन में कल्पना करना छोड़ कर असली दुनिया पर नज़र डालना बहुत जरूरी है, क्योंकि कल्पना बाद में बहुत दुखदाई होती है।

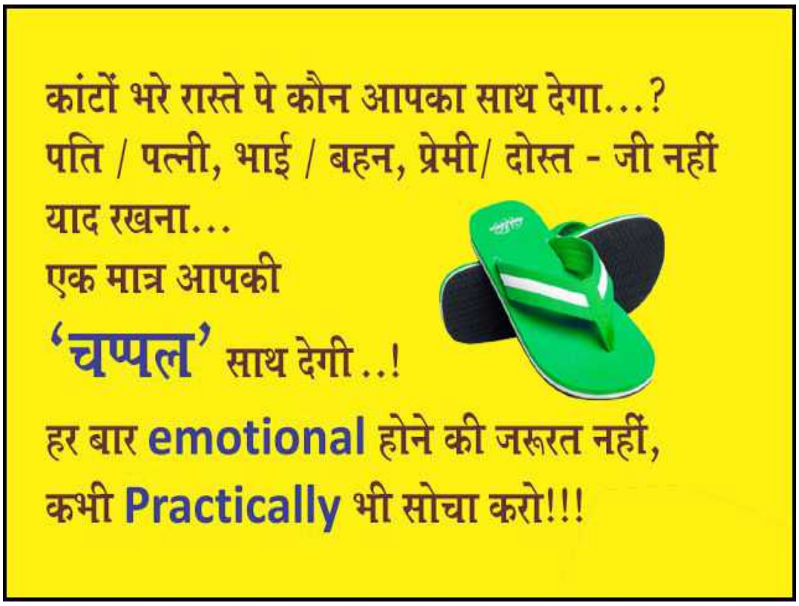

प्रस्तावना

ओडिशा राज्य, देश के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित है, जो 1,55,707 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र में फैला हुआ है। यह राज्य लगभग 480 किलोमीटर की लंबी तटरेखा से जुडा है, जिसमें से कुछ सबसे सुंदर और मनोरम समुद्र तट हैं।

उड़ीसा का हरे-भरे जंगल विविध प्रकार के वनस्पतियों और जीवों की मेजबानी करता है। उड़ीसा में एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, और विशाल प्राकृतिक और खनिज संसाधनों से संपन्न है।

भारत का कुल खनिज भण्डार में से उड़ीसा के खनिज भंडार का हिस्सा 33% लौह अयस्क, 69% प्रतिशत बॉक्साइट और 98% प्रतिशत क्रोमाइट है। इसके अलावा, अन्य खनिज जैसे चैनाक्ले, फायर क्ले, चूना पत्थर, क्वार्ट्ज, कीमती और अर्ध कीमती पत्थर, तांबा, मैंगनीज, ग्रेफाइट, वैनेडियम, आदि भी राज्य में उपलब्ध हैं। लौह अयस्क मयूरभंज, सुंदरगढ़, क्योंझर और जाजपुर जिलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। क्रोमाइट जाजपुर, ढेंकनाल और क्योंझर जिलों में उपलब्ध है, मैंगनीज सुंदरगढ़, क्योंझर, रायगडा और बलांगीर जिलों में उपलब्ध है, और बॉक्साइट कोरापुट और रायगडा जिलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है।

इकोनॉमिक सर्वे ऑफ इंडिया 2018-19 में कहा गया है कि mining industry ने 2.4% का ग्रॉस वैल्यू ऐड किया है और industrial production index ने 2.9% की सकारात्मक वृद्धि दर के साथ, 14.37% का वजन प्रदान करता है। भारत में खनन उद्योग द्वारा सकल पूंजी निर्माण ने 2015-16 में ऋणात्मक 19.6 का अंक से 2017-18 में 7.1 का अंक तक, तेज सकारात्मक वृद्धि दर्ज की है।

2018-19 के लिए ओडिशा के आर्थिक सर्वेक्षण से पता चलता है कि राज्य ने खनन से आने वाली रॉयल्टी से, अपने गैर-कर राजस्व का लगभग 69% राजस्व प्राप्त करने का अनुमान लगाया है। ओडिशा में खनन उद्योग राज्य के आर्थिक विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। इसके साथ ही खनन उद्योग को खनिज संसाधनों के सतत विकास की जिम्मेदारी भी निभानी होगी। हालांकि, यह प्रक्रिया लंबी चलने वाली है, और आने वाली पीढ़ियों के लिए निरंतर होगी।

एमईएमसी सप्ताह 2018-19:

भारत सरकार के खान मंत्रालय का अधीनस्थ विभाग, भारतीय खान ब्यूरो, देश के खनिज उद्योग में सतत विकास लक्ष्यों के प्रसार और कार्यान्वयन के लिए, जिम्मेदारी से कार्य करता आ रहा है। इस जिम्मेदारी को निभाते हुए, भारतीय खान ब्यूरो ने खानों को एक सितारा से

लेकर पांच सितारों तक के रेटिंग करना शुरू की है, जो सतत विकास लक्ष्यों को बढ़ावा देने, और प्रचार करने में मदद करता है। पाँच सितारा खदान का तात्पर्य है कि इस खदान ने सतत विकास के सर्वोत्तम लक्ष्यों को निर्धारित कर प्राप्त किया है। इसके साथ भारतीय खान ब्यूरो अपने क्षेत्रीय कार्यालयों के द्वारा अपने अपने अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले खानों के लिए हर वर्ष खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह का आयोजन कराता है।

खान पर्यावरण और खनिज संरक्षण सप्ताह समारोह, खान समुदाय के बीच सतत विकास कार्यों को सामने लाने, और सार्वजनिक क्षेत्र में अपने सर्वोत्तम प्रयासों का प्रदर्शन करने का एक मौका देता हैं। इस वर्ष भारतीय खान ब्यूरो के भुवनेश्वर क्षेत्रीय कार्यालय के अधिकार क्षेत्र के अंतर्गत, लगभग 78 खानों ने समारोह में भाग लिया और अपनी सर्वोत्तम प्रयासों का प्रदर्शन करने में मुकाबला किया। खानों में काम करने वाले अधिकारी एवं कर्मचारियों को लेकर बनाया गया निरीक्षण टीमों ने भाग लेने वाली खानों का निरीक्षण किया, और सतत विकास लक्ष्यों के विभिन्न विषयों में उनके प्रदर्शन का मूल्यांकन किया।

सतत विकास लक्ष्यों को मोटे तौर पर कुछ विषयों में वर्गीकृत किया गया है, ... जैसे कि :

- लीज क्षेत्र का उपयोग
- रॉयल्टी और अन्य योगदान
- वैधानिक नियमों का पालन
- खदान स्तर पर प्रभावों का प्रबंधन, जैसे कि:
    - o सतत विकास ढांचा पर किया गया खर्च
    - o खनन कार्य
    - o खनिज संरक्षण और शून्य अपशिष्ट खनन
    - o पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण निगरानी और अंतर्राष्ट्रीय मानकों को अपनाना ।
    - o जल का उपयोग और भूजल की निगरानी
    - o हरित ऊर्जा साधन और जलवायु परिवर्तन की पहल
    - और क्रमबद्द खदान बंद योजना और उसका कार्यान्वयन

इसके अलावा,

- सामाजिक प्रभावों जैसे
    - o परियोजना प्रभावित समुदाय का पुनर्वास
    - o परिधीय सामुदायिक विकास
    - o हकधारक की भागीदारी
    - o परिधीय समुदाय के स्वास्थ्य और शिक्षा का आश्रय
    - o सामाजिक और आजीविका का आश्रय
    - o परिवहन इंफ्रास्ट्रक्चर विकास

खनन कार्य:

खान पर्यावरण एवं खनिज संरक्षण सप्ताह के इस वर्ष के आयोजन के दौरान गठित निरीक्षण टीमों ने देखा कि ओडिशा में खनन उद्योग पांच सितारा रेटिंग हासिल करने का लक्ष्य रखता है। कई प्रतिभागी खानों में खनन कार्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ व्यवस्थित पाए गए।

भले ही अड़चनें कई हैं, लेकिन ओडिशा में लगभग पूरी खनन बिरादरी जिम्मेदार खनन के लिए प्रयास कर रही है।

अधिभार एवं अपशिष्ट का प्रबंधन

अपशिष्ट माना जाने वाला पदार्थ लीज क्षेत्र के गैर-खनिज क्षेत्र में ढेर लगाया जाता है, जिन्हे खनन बोल-चाल में waste dump कहते है। डंप को टिघर होकर जमने में पर्याप्त समय की आवश्यकता होती है। अतीत और वर्तमान की

तुलना, निरंतर प्रयासों की कहानी कहती है, जो इन ढेरों को स्थिर करने में लगता हैं। चिनाई वाली दीवारों, पानी के चैनलों, ढलानों पर वेटि-वेर घास उगाना और पेड़ लगाना आमतौर पर कई खानों में देखा जा सकता है।

वृक्षारोपण:

ओडिशा की लगभग एक तिहाई भूमि वन क्षेत्र के अंतर्गत आती है। ओडिशा के खनन क्षेत्र ने, अपने निरंतर वृक्षारोपण कार्यक्रम के माध्यम से, चाहे वो प्रतिपूरक वृक्षारोपण हो सकता है या बंजर क्षेत्र या पुनः प्राप्त क्षेत्र वृक्षारोपण हो, वन विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। अब तक कुल 1,000 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र को वनीकरण कार्यक्रम के तहत लिया गया है और कुल लगभग 6 मिलियन पौधे लगाए गए हैं। कई खानों में पौधे उगाने के लिए अपनी निजी नर्सरी विकसित करते हैं।

खनिज संरक्षण और शून्य अपशिष्ट खनन

खनिज एक मूल्यवान संसाधन होने के नाते, अन्वेषण और पूर्वेक्षण के माध्यम से स्थापित खनिज संसाधनों का निष्कर्षण, वैज्ञानिक तरीके की खनन, खनिज उन्नयन, और आर्थिक उपयोग के माध्यम से अधिकतम किया जाना चाहिए। जीरो वेस्ट माइनिंग राष्ट्रीय लक्ष्य होगा और पूरे रन ऑफ़ माइन के निष्कर्षण और उपयोग को सुनिश्चित करने के लिए माइनिंग टेक्नोलॉजी को उन्नयन करना आवश्यक है।

बाजार की स्थिति और उपलब्ध टेकनालजी किसी भी खदान से उत्पादित अयस्क की विक्रेयता को तय करती है। भारतीय खान ब्यूरो द्वारा समय-समय पर अयस्कों की विक्रेयता और उन्नयन का संभावना के आधार पर खनिज का दहलीज मूल्य निर्धारित किया जाता है।

बाजार मे बिक्री योग्य ग्रेड से कम अयस्क को अस्वीकार्य खनिज माना जाता है। इन अस्वीकार्य खनिज को या तो गीले उन्नयन तरीकों, यानीकि खनिज को पानी से धोकर सफाई करने का तरीके से उन्नत किया जाता है या उपयोग योग्य औसतन ग्रेड का खनिज प्राप्त करने के लिए उच्च ग्रेड के साथ मिश्रित किया जाता है। खनन कार्य के दौरान, खनिज की बहुत कम मात्रा वाले अयस्क की भी खुदाई करनी पडती है। इस निम्न श्रेणी की सामग्री को जहां तक आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो सकता है, उन्नयन करके उच्च श्रेणी में अपग्रेड किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, वर्तमान में क्रोम अयस्क के लिए दहलीज मूल्य दस प्रतिशत है। इस मान के नीचे वाला अयस्क का उपयोग करना संभव नहीं है। जबकि बाजार में बिक्री य्होग्य क्रोम अयस्क का मूल्य लगभग अडतीस प्रतिशत chromium oxide है। अयस्क उन्नयन के क्षेत्र में अनुसंधान और विकास आज सत्तरह से अठरह प्रतिशत के फीड ग्रेड से चवालीस प्रतिशत chromium oxide का ग्रेड प्राप्त करना संभव बनाता है। उन्नयन के लिए प्रयुक्त सामग्री की मात्रा और निकाली गई उपयोग्य अयस्क की मात्रा को देखें तो, यह देखा जा सकता है कि प्रयुक्त प्रत्येक सौ टन के लिए, लगभग तेहत्तर टन उपयोग्य अयस्क प्राप्त होसकता है।

इसी तरह, लौह अयस्क के लिए दहलीज मूल्य पैंतालीस प्रतिशत लोह है। अयस्क उन्नयन मामले में हुई अध्ययनों से पता चलता है कि चालीस प्रतिशत लोह से कम की सामग्री अठावन प्रतिशत लोह में अपग्रेड की जा सकती है, लेकिन मात्रात्मक पुनर्प्राप्ति केवल पचास प्रतिशत है; कुछ मामलों में व्युत्पन्न अयस्क प्रयुक्त प्रत्येक सौ टन के लिए बारह टन से अधिक नहीं है। उस हिसाब से, वर्तमान में केवल पचास प्रतिशत

लोह वाला सामग्री को बांसठ प्रतिशत लोह में उन्नयन के लिए ही लिया जा रहा है।

खैर, मुद्दा यह है कि खदान से उत्खनन किए गए अयस्क का अधिकतम उपयोग, उन्नयन तकनीकों से होता है और इस वजह से अपशिष्ट का मात्रा कम से कम किया जा सकता है। धुलाई द्वारा उच्च ग्रेड प्राप्त करने के बाद छोड़ी गई सामग्री को टैलिंग कहा जाता है, जिसे रद्दी के हिसाब से ढेर किया जाता है।

अयस्क उन्नयन संयंत्र स्तापित करने में अच्छी खासी निवेश लगता है। इसलिए, खनिज उन्नयन प्रक्रिया के वजह से यदि उस खनिज का बिक्री का दर कुल मिलाकर बाजार का वर्थमान दर से ज्यादा हो जाय तो खनिज उत्पादक को समस्या कडा हो सकता है। ऐसे स्थिति में, कई खानों ने इन खनिजों को विपणन और आर्थिक संभावनाओं के कारण अलग-अलग ढेर कर रख दिया, जैसा कि कहा जाता है कि "आज की रद्दी कल का धन है"।

हालांकि, यह एक तथ्य है कि टेकनालजी में गंभीर अनुसंधान एवं विकास की आवश्यकता है, जो स्टील, सीमेंट, मिश्र धातु और आदि जैसे अंतिम उत्पादों के निर्माण के लिए खनिज अयस्कों का उपयोग करता है। क्योंकि वर्थमान में उपस्थित टेकनालजी काफी ऊँचा ग्रेड का अयस्क का मांग कर रहा है।

जबकि कुछ अयस्क उन्नयन संयंत्रों ने उन्नयन प्रक्रिया से उत्पन्न टेलिंग को प्रबंधित करने के लिए फ़िल्टर प्रेस को शामिल किया है, कुछ ने टेलिंग तालाबों का उपयोग करता हैं। हालांकि, आज टेकनालजी के आगमन के साथ, कई खानों को क्रशिंग प्लांट के स्तर पर औसत बिक्री योग्य ग्रेड प्राप्त करने के लिए विभिन्न ग्रेड की सामग्री का सम्मिश्रण किया जा रहा है।

लीज़ होल्ड क्षेत्रों के भीतर पर्यावरण का संरक्षण खनन कार्यों का हिस्सा है। खनन कार्यों की योजना इस तरह से बनाई जाती है कि पर्यावरण पर प्रभाव कम से कम हो। कई खदानें अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाती हैं जैसे आईएसओ 14000, आईएसओ 14001 आदि। वायु और जल प्रदूषण प्रमुख क्षेत्र हैं जिन्हें रोकने और दबाने के लिए हर खदान कड़ी मेहनत करती है। वायु प्रदूषण के प्रभावों को कम करने के लिए haul road में पानी छिडकने के लिए समय अवदि में चलने वाला स्थाई sprinklers को स्थापित किया हुआ दृश्य आइ तोर पर दिखाई देता है। इसके अलावा पानी टेंकरों को इस्तेमाल करके हाल रोड पर पानी छिडकना, उच्च दबाव मिस्ट गन जैसे नवीनतम यंत्रों को इस्तेमाल करना आदि भी आम बात बन चुका है। इतना ही नहीं खनिज प्रेषण ट्रकोंकाटयर धोने तक का बहुत सारा ध्यान रखा जाता है।

खदानों के प्रतिष्ठानों से निकलने वाले अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण द्वारा जल के प्रबंधन पर प्रभावी रूप से ध्यान दिया जाता है। इसके अलावा वर्षा जल को संरक्षित करके पानी का संरक्षण करना ओडिशा में खनन उद्योग द्वारा अपनाया गया सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है। कही कहीं देखा गया है कि वर्षा जल तालाब को आकर्षनीय पिकनिक स्पॉट में भी विकसित किया गया है, जो स्थानीय जनता के हित में महत्वपूर्णा कदम है। मानसून के दौरान खदान के पानी के प्रवाह को व्यवस्थित करने के लिए कई उपाय किए जाते हैं। कई खदानें पट्टे के क्षेत्र में पीजो मीटर स्थापित करके भूजल की निगरानी करती हैं।

हरित ऊर्जा का साधन पर्यावरण संरक्षण के उपाय का एक और पहलू है। भारत सरकार ने निर्धारित किया है कि खदान की ऊर्जा आवश्यकताओं का एक हिस्सा सौर ऊर्जा से पूरा किया जाना चाहिए। इस पहल के तहत, कई खानों ने अपने खदान पट्टे के भीतर सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित किए हैं।

माइन रिक्लेमेशन खनन की गई भूमि को पुनरुद्धार कर खनन से पहले जो स्थिति में भूमि था उस स्थिति या उससे बेहतर स्थिति में लाना होता है। हालांकि भूमि का पुनरुद्धार खनन कार्य समाप्त होने के बाद का प्रक्रिया है, लेकिन इस काम का योजना खनन कार्य आरंभ होने से पहले से ही किया जाता है। अग्रगमन खदान बंद योजना इसलिए पर्यावरण संरक्षण के संदर्भ में एक प्रमुख हिस्सा है। खनन कार्य का समाप्ति के बाद उस क्षेत्र को वापस भरने कि प्रक्रिया से खान बंद किया जाता है। गैर खनिज पदार्थ जो ढेर कर रखा जाता है, उस पदार्थ को खनन कार्य समाप्त क्षेत्र को वापस भरने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। समय श्रृंखला उपग्रह तस्वीरें हमें विभिन्न खानों में बैकफ़िलिंग गतिविधियों की प्रगति की स्पष्ट तस्वीर देती हैं।

पुनरुद्धार एवं पुनर्वास न केवल खुदाई की गई भूमि से संबंधित है, बल्कि अपशिष्ट के ढेर के साथ भी जुड़ा हुआ है। ओडिशा में, पुनरुद्धार एवं पुनर्वास मुख्य रूप से डंप के ढलानों और पुन:प्राप्त क्षेत्र पर वृक्षारोपण द्वारा किया जाता है। विशेष रूप से बॉक्साइट क्षेत्र में जैसे जैसे खनन आगे बढ़ता है, पुन:प्राप्ति और पुनर्वास समवर्ती रूप से किया जाता है। इस वर्ष ओदिशा का खनन क्षेत्र में लगभग 223 हेक्टेर का इलाका पुन:प्रप्ति के लिए लिया गया है।

सामाजिक प्रभावों को संबोधित करना

खनिज क्षेत्रों के सतत विकास में खनन क्षेत्रों की परिधि में रहने वाले समुदायों का समावेश आवश्यक है। भारत सरकार ने जिला खनिज फाउंडेशन फंड के माध्यम से एक कोष का प्रावधान किया है जिसका उद्देश्य खनन गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों के विकास के लिए उपयोग किया जाना है। इसके अलावा, कई खनन कंपनियों की अपनी सीएसआर प्रणाली है, जिसके माध्यम से वे परिधीय समुदायों के विकास में योगदान करते हैं। मुख्य रूप से सीएसआर प्रणाली का उद्देश्य स्वास्थ्य सुविधाएं प्रदान करना और स्थानीय लोगों की शिक्षा का सहयोग करना है।

सीएसआर के कुछ उल्लेखनीय कार्यों का हिस्सा हैं, बुनियादी सुविधाएं, जैसे, ग्रामीण सड़कों को बिछाने से स्थानीय समुदायों के बीच और आस पास का शहरों के साथ संपर्क एवं संचार आसान हो रहा है। ओवर हेड टैंक का निर्माण एवं पाईप-लाईन लगाकर, आसपास के गांवों को पीने के पानी की सुविधा प्रदान किया जा रहा है। सोर ऊर्जा से चलने वाला बत्ती ग्रामीण गलियों में लगाकर दिया जा रहा है। आजीविका सहयोग जैसे कि स्थानीय स्वयं सहायता समूह को आर्थिक आश्रय आदि।

स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत कई खानोंने अपने परिधीय गावों को अपना रहे है और वहां का समुदाय के लिए शौचालय बनाके देने की उन्नत कार्य भी कर रहे है। ओडिशा में अब तक सीएसार के जरिए कई गावों को खुले में शौच मुक्त घोषित किया जा चुके है।

ये प्रयास जारी रहें।

पेड़ ने पूछा......

दयानंद उपाध्याय, वरिष्ठ सहायक खान नियंत्रक

कल एक पेड़ से मुलाकात हो गई।
चलते-चलते आंखों में कुछ बात हो गई।

बोला पेड़ लिखते हो संवेदनाओं को।
उकेरते हो रंग भरी भावनाओं को।
क्या मेरी सूनी संवेदनाओं को छू सकोगे ?
क्या मेरी कोरी भावनाओं को जी सकोगे ?
मैंने कहा कोशिश करूंगा कि मैं तुम्हे पढ़ सकूं।
तुम्हारी भावनाओं को शब्दों में गढ़ सकूं।
बोला वो अगर लिखना जरूरी है तो मेरी संवेदनाएं लिखो तुम।
अगर लिखना जरूरी है तो मेरी भावनाएं लिखो तुम।
क्यों नहीं रुक कर मेरे सूखे गले को तर करते हो ?
क्यों नोंच कर मेरी सांसे ईश्वर को प्रसन्न करते हो ?
क्यों मेरे बच्चों के शवों पर धर्म जगाते हो ?
क्यों हम पेड़ों के शरीरों पर धर्मयज्ञ करवाते हो ?
क्यों तुम्हारे सामने विद्यालय के बच्चे तोड़ कर मेरी टहनियां फेंक देते हैं ?
क्यों तुम्हारे सामने मेरे बच्चे दम तोड़ देते हैं ?
हजारों लीटर पानी नालियों में तुम क्यों बहाते हो ?
मेरे बच्चों को बूंद-बूंद के लिए तुम क्यों तरसाते हो ?
क्या मैं तुम्हारे सामाजिक सरोकारों से इतर हूं ?
क्या मैं तुम्हारी भावनाओं के सागर से बाहर हूं ?
क्या तुम्हारी कलम सिर्फ हत्याओं एवं बलात्कारों पर चलती है ?
क्या तुम्हारी लेखनी क्षणिक रोमांच पर ही खिलती है ?
अगर तुम सचमुच सामाजिक सरोकारों से आबद्ध हो।
अगर तुम सचमुच पर्यावरण के लिए प्रतिबद्ध हो।
लेखनी को चरितार्थ करने की कोशिश करो।

पर्यावरण संरक्षण को अपने आचरण में लाने की कोशिश करो।
कोशिश करो कि कोई पौधा न मर पाए।
कोशिश करो कि कोई पेड़ न कट पाए।
कोशिश करो कि नदियां शुद्ध हो।
कोशिश करो कि अब न कोई युद्ध हो।
कोशिश करो कि कोई भूखा न सो पाए।
कोशिश करो कि कोई न अबला लूट पाए।
हो सके तो लिखना की नदियां रो रही हैं।
हो सके तो लिखना की सदियां सो रही हैं।
हो सके तो लिखना की जंगल कट रहे हैं।
हो सके तो लिखना की रिश्ते बंट रहे हैं।
लिख सको तो लिखना हवा जहरीली हो रही है।
लिख सको तो लिखना कि मौत पानी में बह रही है।
हिम्मत से लिखना की नर्मदा के आंसू भरे हुए हैं।
हिम्मत से लिखना की अपने सब डरे हुए हैं।
लिख सको तो लिखना की शहर की नदी मर रही है।
लिख सको तो लिखना की वो तुम्हे याद कर रही है।
क्या लिख सकोगे तुम गोरैया की गाथा को?
क्या लिख सकोगे तुम मरती गाय की भाषा को ?
लिख सको तो लिखना की तुम्हारी थाली में कितना जहर है।
लिख सको तो लिखना की ये अजनबी होता शहर है।
शिक्षक हो इसलिए लिखना की शिक्षा सड़ रही है।
नौकरियों की जगह बेरोजगारी बढ़ रही है।
शिक्षक हो इसलिए लिखना कि नैतिक मूल्य खो चुके हैं।
शिक्षक हो इसलिए लिखना कि शिक्षक सब सो चुके हैं।
मैं आवाक् था उस पेड़ की बातों को सुनकर।
मैं हैरान था उस पेड़ के इल्जामों को गुन कर।
क्या वास्तव में उसकी भावनाओं को लिख पाऊंगा?
या यूं ही संवेदना हीन गूंगा रह जाऊंगा।

हिन्दी भाषा के लिए विद्वानों के सुविचार

(दयानंद उपाध्याय, वरिष्ठ सहायक खान नियंत्रक द्वारा एकत्र किया गया)

जापानियों ने जिस ढंग से विदेशी भाषाएँ सीखकर अपनी मातृभाषा को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया है उसी प्रकार हमें भी मातृभाषा का भक्त होना चाहिए।

- श्यामसुंदर दास

विचारों का परिपक्व होना भी उसी समय संभव होता है, जब शिक्षा का माध्यम प्रकृतिसिद्ध मातृभाषा हो और हमारी प्रकृति सिद्ध भाषा हिन्दी ही है।

- पं. गिरधर शर्मा

किसी देश में ग्रंथ बनने तक वैदेशिक भाषा में शिक्षा नहीं होती थी। देश की भाषा में शिक्षा होने के कारण स्वयं ग्रंथ बनते गए हैं।

- साहित्याचार्य रामावतार शर्मा

जितना और जैसा ज्ञान विद्यार्थियों को उनकी जन्मभाषा में शिक्षा देने से अल्पकाल में हो सकता है; उतना और वैसा पराई भाषा में सुदीर्घ काल में भी होना संभव नहीं है।

- घनश्याम सिंह

मैं महाराष्ट्रीयन हूँ, परंतु हिन्दी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है जितना किसी हिन्दी भाषी को हो सकता है।

- माधवराव सप्रे

मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती।

- डॉ. मुकुन्दस्वरूप वर्मा

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

- महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिन्दी भाषा की उन्नति के बिना हमारी उन्नति असम्भव है।

- गिरधर शर्मा

भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।

- पुरुषोत्तमदास टंडन

देश तथा जाति का उपकार उसके बालक तभी कर सकते हैं, जब उन्हें उनकी भाषा द्‌वारा शिक्षा मिली हो।

- पं. गिरधर शर्मा

अंग्रेजी सीखकर जिन्होंने विशिष्टता प्राप्त की है, सर्वसाधारण के साथ उनके मत का मेल नहीं होता। हमारे देश में सबसे बढ़कर भेद वही है।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

ऐसे आदमी आज भी हमारे देश में मौजूद हैं जो समझते हैं कि शिक्षा को मातृभाषा के आसन पर बिठा देने से उसकी कीमत ही घट जाएगी।

- रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मेरा आग्रहपूर्वक कथन है कि अपनी सारी मानसिक शक्ति हिन्दी के अध्ययन में लगावें।

- विनोबा भावे

हिन्दी द्‌वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

- स्वामी दयानंद

हिन्दी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है।

- मैथिलीशरण गुप्त

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।

- (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

विदेशी भाषा का किसी स्वतंत्र राष्ट्र के राजकाज और शिक्षा की भाषा होना सांस्कृतिक दासता है।

- वाल्टर चेनिंग

जब से हमने अपनी भाषा का समादर करना छोड़ा तभी से हमारा अपमान और अवनति होने लगी।

- (राजा) राधिकारमण प्रसाद सिंह

हिन्दी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

- डॉ. राजेंद्रप्रसाद

जिस देश को अपनी भाषा और अपने साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

- देशरत्न डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

हिन्दी भारतीय संस्कृति की आत्मा है। - कमलापति त्रिपाठी

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।

- विनोबा भावे

आज हिंदी बोलने का शौक हुआ..

#आज_हिंदी_बोलने_का_शौक_हुआ,
घर से निकला और एक ऑटो वाले से पूछा,
"त्री चक्रीय चालक पूरे दिल्ली शहर के परिभ्रमण में कितनी मुद्रायें व्यय होंगी ?"
ऑटो वाले ने कहा 😇, "अबे हिंदी में बोल रे.."😒
मैंने कहा, "श्रीमान, मै हिंदी में ही वार्तालाप कर रहा हूँ।"
ऑटो वाले ने कहा, "मोदी जी पागल करके ही मानेंगे । चलो बैठो, कहाँ चलोगे?"
मैंने कहा, "परिसदन चलो"😐
ऑटो वाला फिर चकराया !😇
"अब ये परिसदन क्या है?"
बगल वाले श्रीमान ने कहा, "अरे सर्किट हाउस जाएगा"
ऑटो वाले ने सर खुजाया और बोला, "बैठिये प्रभु"
रास्ते में मैंने पूछा, "इस नगर में कितने छवि गृह हैं ??"
ऑटो वाले ने कहा, "छवि गृह मतलब ??"
मैंने कहा, "चलचित्र मंदिर"
उसने कहा, "यहाँ बहुत मंदिर हैं ... राम मंदिर, हनुमान मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, शिव मंदिर"
मैंने कहा, "भाई मैं तो चलचित्र मंदिर की बात कर रहा हूँ जिसमें नायक तथा नायिका प्रेमालाप करते हैं."
ऑटो वाला फिर चकराया, "ये चलचित्र मंदिर क्या होता है ??"
यही सोचते सोचते उसने सामने वाली गाडी में टक्कर मार दी।
ऑटो का अगला चक्का टेढ़ा हो गया और हवा निकल गई।
मैंने कहा, "त्री चक्रीय चालक तुम्हारा अग्र चक्र तो वक्र हो गया"
ऑटो वाले ने मुझे घूर कर देखा और कहा, "उतर साले ! जल्दी उतर !"
आगे पंक्चरवाले की दुकान थी। हम ने दुकान वाले से कहा....
"हे त्रिचक्र वाहिनी सुधारक महोदय, कृपया अपने वायु ठूंसक यंत्र से मेरे त्रिचक्र वाहिनी के द्वितीय चक्र में वायु ठूंस दीजिये। धन्यवाद।"
दूकानदार बोला कमीने सुबह से बोहनी नहीं हुई और तू श्लोक सुना रहा है।
आनंद ही आनंद
विश्वास है कि उपर्युक्त लेख पठन से आप का अंतःकरण प्रफुल्लित हुआही होगा ।

सत्यमेव जयते

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **कंठस्थ** का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए **लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप** तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

स्वच्छता ही सेवा

भारतीय खान ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, भुवनेश्वर